भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध संदर्भ

डॉ०संदीप कुमार पांडेय
डॉ०मनोज कुमार त्रिपाठी
डॉ० अमिताबेन बी. पटेल

भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध संदर्भ

सर्व तीर्थ मयी माता सर्व देवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्

डॉ०संदीप कुमार पांडेय
डॉ०मनोज कुमार त्रिपाठी
डॉ० अमिताबेन बी. पटेल

प्रकाशन

जिज्ञासा प्रकाशन (ओ.पी.सी.) प्रा. लि.
ई-८६, स्वर्ण जयंती पुरम,
गाजियाबाद -२०१००२ (उ.प्र.)

B-73, R.K. PURAM, GOVINDPURAM,
GHAZIABAD-201015 (U.P)

CONTACT

Whatsapp - 8810598485
Call - 9958426855
E-Mail - jigyasaprakashan2019@rediffmail.com
Website - htpp://jigyasaprakashan.com

PRINTERS

Nidhi Printers Ghaziabad-201002 (U.P)

ISBN - 978-81-97648-49-6

© DR. SANDEEP KUMAR PANDEY
All Rights Reserved
प्रथम संस्करण : २०२४
मूल्य - रु.५९९/-

Title - BHARTIYA GYAN PARAMPARA KE VIVIDH SANDHARABH
Written by - DR. SANDEEP KUMAR PANDEY
DR. MANOJ KUMAR TRIPATHI
DR. AMITABEN B. PATEL
Price - Rs.599/-

अनुक्रम

1. भारतीय ज्ञान परम्परा : प्रबंधन और कौशल 01
तृप्ति सिंह, डॉ0 तरूण श्रीवास्तव

2. भारतीय ज्ञान परम्परा : प्राचीन विज्ञान 17
डॉ0 नीपाबेन डी0 भारूचा

3. भारतीय ज्ञान परम्परा : पर्यावरण संरक्षण 26
शशि शेखर

4. भारतीय ज्ञान परम्परा : दर्शन 31
डॉ0 जयश्री के0 दवे

5. भारतीय ज्ञान परम्परा : उपवास 36
डॉ भेरूलाल साँखला

6. भारतीय ज्ञान परम्परा : नारी विमर्श...41
पिंकी गुप्ता

7. भारतीय ज्ञान परम्परा : जल संरक्षण 49
डॉ0 जितेन्द्र प्रसाद

8. भारतीय ज्ञान परम्परा : गुरू–शिष्य संबध 58
डॉ0 शक्ति सिंह

9. भारतीय ज्ञान परम्परा : शिक्षा व दर्शन 69
अनिता भाटी

10. भारतीय ज्ञान परम्परा : संस्कृत नाट्य साहित्य के परिप्रेक्ष्य में ...76
उमेश चन्द तिवारी

11. भारतीय ज्ञान परम्परा : मूल्य 84
डॉ0 मोहित मिश्रा

12. भारतीय ज्ञान परम्परा : ज्योतिष 91
मनमत्य मिश्रा, दिनेश तिवारी

13. भारतीय ज्ञान परम्परा : चित्रकला 107
डॉ0 प्रीती कछावा

14. भारतीय ज्ञान परम्परा के विस्तार में साहित्य की भूमिका 125
अनीस अहमद खान

15. भारतीय ज्ञान परम्परा : जीवन शैली 134
डॉ0 पूजा शर्मा

16. भारतीय ज्ञान परम्परा : मानवीय मूल्य 138
डॉ0 राम कृपाल

17. भारतीय ज्ञान परम्परा : प्रथाएं 146
पुनीता खरवार

18. भारतीय ज्ञान परम्परा : सभ्यता व संस्कृति....................152
डॉ0 अमिताबेन बी0 पटेल

19. भारतीय ज्ञान परम्परा : दर्शन 158
डॉ0 अर्ण्णदा शंकर आचार्य

20. Indian Knowledge System in Personality Development ---------165
Shelly Sharma

21. Indian Mind : Osho and Indian way of -----------175
approaching the functioning of the mind
Ritwik Rathod

22. Indian Knowledge System and Human -----------182
Well Being
Sharad Sharma

23. A Traditional Water Conservation-----------------191
techniques in India
Ratan Lal

24. Insights into Educational and Managerial--------203
Expertisein Indian Knowledge Traditions
Brijesh Kumar B. Chaudhari

25. Indian Knowledge System : Agriculture --------211
Rahul Khirwar

26. Indian Knowledge System : world Peace ------219
Dr. Deepalee A Mahida

27. Indian Knowledge System : Sacred Tree--------224
Megha Kanojia

28. Indian Knowledge Tradition and ----------------233
Experiential -Learning : A Study in
the Contest of NEP-2020
Rashmi , Prof. Harishankar Singh

29. Indian Knowledge System and Diet Habits : ---245
A Halistic Approch to Nourishment and
Well Being
Dr. Jetal J. Panchal

11 भारतीय ज्ञान परंपरा : मूल्य

डॉ0 मोहित मिश्रा
सहायक प्राध्यापक
आई.एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
(उ0प्र0)

भारतीय शिक्षा पद्धति को प्रारम्भिक दौर से देखने से ज्ञात होता है कि भारत में शिक्षक बनने और शिक्षा ग्रहण करने की इच्छा स्वतः ही जाग्रत होती रही है। जैसा कि हम सभी जानते ही हैं भारत में शिक्षा का प्रारंभिक दौर गुरुकुल परंपरा का महत्व था, विद्यार्थी के पास स्वतंत्रता थी कि वह क्या सीखना चाहता है। शिक्षा प्राप्त करने जाने वाले विद्यार्थी को अपनी रुचि का वर्णन करना होता था उसके आधार पर उसका चयन गुरुकुल में किया जाता था। आज जिस नई शिक्षा नीति को लागू किया गया है वह भी विद्यार्थी को स्वतंत्रता प्रदान करती है कि विद्यार्थी अपने विषय का चयन अपनी रुचि के आधार पर कर सकता है। नई शिक्षा नीति ने बंधनों को तोड़ दिया है जो संगीत के साथ साथ विषय विज्ञान का विषय पढ़ने का मौका प्रदान करती है। शिक्षा के क्षेत्र में जो दीवार बनी हुई थी उसको तोड़ने का कार्य इस नई नीति ने किया है। समकालीन परिस्थिति में रोजगार को ध्यान में रखते हुए शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी आते हैं जिनको इस शिक्षा नीति ने स्वतंत्रता प्रदान की है, जिससे वह अपने जीवनयापन का निर्वाहन कर सके। वर्तमान परिस्थितियों में जिस प्रकार की प्रतियोगिता हो रही है उसके लिए शिक्षा को नई शैली में बदलने का कार्य इस नई नीति ने किया है। आज शिक्षा को तकनीक से जोड़ा गया है जो समय की माँग रही है। आज शिक्षा को आधुनिक बनाना समय की माँग रही है जिसको इस नई शिक्षा नीति के द्वारा पूर्ण किया जा रहा है। गांधी जी की स्वतंत्र ग्राम इकाई को भी इसका आधार माना जा सकता है जिसमें आत्मनिर्भर और कौशल प्रधान शिक्षा नीति का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। आज उस परिदृश्य को धरातल पर उतरा गया है। वर्तमान समय में शिक्षा का विस्तार करना समय की माँग रही है।

नई शिक्षा नीति हमारे विद्यार्थियों को बृहत परिदृश्य प्रदान करती है। भारतीय शिक्षा के विकास को निरंतर गतिशीलता प्रदान करने के लिए नवीन शोध कार्यों को बढ़ावा दिया जाता रहा है। भारत को प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ स्थान मिला है। शिक्षा के लिए भारत के निम्न प्रदेशों का नाम प्रमुख हैं नालंदा, तक्षशिला आदि को विश्व स्तर पर महत्व मिला है। देश ही नहीं बल्कि भिन्न–भिन्न विदेशों के विद्यार्थी भी इन केंद्रों से शिक्षा ग्रहण करने आते रहे है। शिक्षा के द्वारा किसी भी राष्ट्र के निर्माण का प्रारंभ होता है, जिसके बिना युवा वर्ग को मार्ग दिखाना संभव नहीं हो सकता। शिक्षा न मिलने की स्थिति में किसी भी राष्ट्र के विनाश का प्रारंभ हो जाता है। नई शिक्षा नीति 2020 को सहभागी बनाया गया है, जिसमें 2 लाख से अधिक विद्वानों के सुझाव लिए गए है। यह शिक्षा नीति वर्तमान के साथ–साथ भविष्य की पीढ़ी का भी ध्यान रखती है, जिसके अंतर्गत आने वाली पीढ़ी की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं व चुनौतियों का भी विशेष ध्यान दिया गया है। यह शिक्षा नीति वर्तमान शिक्षा के अनुपात को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जिसके द्वारा विद्यार्थी को उच्च शिक्षा में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा एवं डिग्री पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया गया है। यह नीति शोधपरक, नवाचार और अनुसंधान को आगे बढ़ाने में सहायक प्रतीत हो रही है। इस नीति के माध्यम से देश के युवा को समकालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वैश्विक परिवेश को समझने में सहायता प्राप्त होगी। नई शिक्षा नीति के द्वारा शिक्षा प्रणाली में भारतीय परंपराओं और मूल्यों को महत्व दिया गया है। इस शिक्षा नीति ने इंडिया के स्थान पर भारत का स्वरूप देखने का मौका मिलता दिखाई दे रहा है। उच्च शिक्षा के द्वारा युवाओं को अधिक तार्किक एवं लक्ष्य केंद्रित बनाने की जरूरत दिखाई देती है। आज तकनीकी शिक्षा में विज्ञान और इंटरनेट संबंधी विषय अंग्रेजी भाषा में प्रसारित किया जाता रहा है जिसको स्वदेशी भाषा में आसानी से प्रसारित किया जाए इसकी व्यवस्था हो रही है।

गंगवाल सुभाष 2020 ने लिखा है कि 21वीं सदी ज्ञान प्रधान सदी है जिसमें विज्ञान एवं तकनीकी विकास परिवर्तन के प्रमुख आधार है। किसी भी देश, समाज और परिवार, समृद्ध एवं प्रतिस्पर्द्धी बनाने के

लिए शिक्षा को महत्व देना होगा। भारत में शिक्षा केंद्र एवं राज्यों का विषय है। केंद्र सरकार राष्ट्रीय हित में शिक्षा का मसौदा तैयार करती है, जिनका अनुमोदन संसद द्वारा लिया जाता है लेकिन राज्यों की विधान सभाओं को भी विचार विमर्श, बहस के माध्यम से अनुमति प्रदान करनी होती है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सहभागी बनाया गया है। यह नीति विद्यार्थियों को कार्य कौशल सीखने को महत्व देती है, वर्तमान समय में रोजगार की बढ़ती माँग को नियंत्रित करने एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षा में कौशल युक्त शिक्षा को बढ़ावा देना प्रारंभ किया है इस संदर्भ में प्रो. शर्मा के. एल. 2020 ने अपने लेखपत्र में लिखा है कि शिक्षा से सशक्त और सविमर्शी समाज बनया जा सकता है लेकिन शिक्षा इतनी गुणवत्तापरक हो कि मानुष्य खुद को स्वतंत्र, रचनात्मक और नैतिक दृष्टि समझ सके। शिक्षा परिवर्तन और सशक्तिकरण का साधन है। शिक्षा को महत्व देते हुए व्यक्ति को नवीन दृष्टि प्रदान करना एवं उसकी क्रिया शीलता का विकास करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए, जिसके द्वारा व्यक्ति एक सभ्य समाज का निर्माण करने में सफल हो सकता है। शिक्षा विद्यार्थी को यदि सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक विवेचना की दृष्टि प्रदान नहीं करती तो वह नीति अनुचित हो जाती है। भारत की प्राचीन शिक्षा के मूल को देखने पर ज्ञात होता है की शिक्षा के द्वारा अनेक प्रकार के परिवर्तन प्रस्तुत हुए है।

सिंह दुर्गेश 2020 ने अपने लेख पत्र में लिखा है कि भारत कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था त्रिस्तरीय है जिसमें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा शामिल है। यह शिक्षा व्यवस्था शिक्षित लेकिन रोजगार विहीन युवाओं को तैयार करती है। जिससे स्पष्ट होता है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था विश्व स्तर के कुशल एवं दक्ष युवा तैयार करने में सक्षम नहीं है। सरकार को इसके लिए शिक्षा में निवेश करना होगा। देश के युवाओं को रोजगार प्रदान करना तथा उनको अपने खुद के कारखाने प्रारंभ करने पर जोर दिया जा रहा है। वर्तमान में शिक्षा का दबाव युवा को स्वावलंबी बनाने का है, जिससे राष्ट्र और राज्य दोनों को लाभ प्राप्त होता है।

नई शिक्षा नीति के द्वारा पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त परिणाम के महत्व को समझते हुए विद्यार्थियों के अंदर होने वाले परिवर्तन का विस्तृत वर्णन किया गया है। यूजीसी के द्वारा पाठ्यक्रम में जो परिवर्तन किए गए उनका महत्व निकट भविष्य में दिखाई देगा। मनुष्य के सीखने की प्रक्रिया को यदि ब्लूम टैक्सोनामी के तीन भागों के आधार पर देखा जाए तो, 1. Cognitive Domain2. Affective Domain's3.Psychomotor Domainका सरल और सहज भाषा में शिक्षण एव सीखने की प्रक्रिया का स्वरूप दिखाई देता है। एक बालक जो अपनी माता के माध्यम से प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करता है उसके लिए एक शब्द का महत्व उसके कार्य के आधार पर निर्धारित हो जाता है। उदाहरण के आधार पर एक बच्चे को माता द्वारा बताए गए पंखे के नाम को उसके कार्य के आधार पर पहचाने और उससे परिचित करने का कार्य किया तो उसके लिए सभी घूमने वाली वस्तुओं का नाम पंखा ही हो जाता है क्योंकि बच्चे के लिए उसका कार्य ही महत्व रखता है, इस प्रकार से च्लबीवउवजवत क्वउंपद में जो कार्य हमें सीखा है उसका संबंध मानसिक एवं शारीरिक क्रिया के साथ जुडा होता है जिसमें निरंतर प्रयोग होने पर वह परिपूर्णता तक पहुँचता चला जाता है। इस उदाहरण में बचपन में सीखी गई साइकिल से कार या मोटर साइकिल तक की यात्रा का वर्णन किया जा सकता है, जिसमें प्रारम्भिक कष्ट के बाद व्यक्ति उसमें परिपूर्ण होता चला जाता है। निरंतर प्रयोग होने के कारण रास्ते के अवरोध भी महत्वपूर्ण नहीं रह जाते सामान्य रूप से उनका निवारण होता रहता है।

परिणाम आधारित पाठ्यक्रम का महत्व तभी है जब एक विद्यार्थी आवश्यकता अनुसार पाठ्यक्रम में पढ़ाई गई बातों का प्रयोग अपने जीवन में भी यथा संभव अवसर पर उचित रूप से कर सके। परिणाम आधारित पाठ्यक्रम के द्वारा ही दो तरफा मार्ग खोला जा सकता है जिससे हमारे पाठ्य के महत्व को समझा जा सकता है। नई शिक्षा नीति की विशेषताओं में यह एक मुख्य बिन्दु है जिससे विद्यार्थी को सीखना एवं उसको जीवन में प्रयोग करना विशेषता है। नई शिक्षा नीति ने विद्यार्थी को स्वतंत्रता प्रदान की है। वर्तमान समय में विद्यार्थी

अपनी रुचि को अधिक महत्व देता है जिसकी स्वतंत्रता नई शिक्षा नीति के द्वारा विषय के चयन के रूप में प्रदान किया जा रहा है। अध्ययन के परिणाम का आधार बताए तो वह तीन भागों में वर्णन किया जा सकता है, जो निम्न प्रकार है.

1. Instructional Intent
2. Direction of Instruction
3- Guideline for Evaluationजिनका महत्व समझने पर ज्ञात होता है कि हम क्या सिखा रहे हैं? कैसे सिखा रहे हैं? हम विद्यार्थी का मूल्यांकन कैसे कर रहे हैं? या उसकी क्या प्रविधि प्रयोग करेंगे। उन्होंने ए–बी–सी–डी सूत्र में बाँधते हुए समझा जा सकता है कि ए– अध्येयता जो सिख रहा है वह कौन है? बी– अपने अध्येयता के आधार पर शिक्षण कला का प्रयोग करना जिससे हमारी बात का संप्रेषित होने में अवरोध उत्पन्न न हो, शिक्षा का महत्व अध्यापक और अध्येयता दोनों पर निर्भर करता है। परिणाम आधारित पाठ्यक्रम में अध्येयता के असामान्य परिस्थितियों में अपने ज्ञान का प्रयोग करने में सक्क्षम होना आवश्यक होता है।

विद्यार्थियों को सामान्य जानकारी के माध्यम से पाठ्यक्रम की जानकारी देना सरल तरीका माना जाता है, जिससे विद्यार्थी सामान्य रूप से अपनी समझ को विकसित करने का प्रयास करता है। हम इसका प्रयोग सामान्य प्रकार के प्रश्न का निर्माण करते हुए उनकी उनकी समझ का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थी का पाठ्यक्रम के द्वारा किसी भी घटना या परिस्थिति का मूल्यांकन करने का उत्साह उत्पन्न करना अवस्यक होता है। जिससे वह अपने अध्ययन का प्रयोग जीवन में करने योग्य निर्मित हो सके।

प्रश्न पत्र निर्माण उचित प्रकार समझाया गया जिससे सपूर्ण पाठ्यक्रम को आधार बनते हुए विद्यार्थी के ज्ञान का परीक्षण किया जा सकता है। प्रश्न पत्र के द्वारा एक विषय को दूसरे विषय के साथ जोड़ कर प्रश्न करना अधिक लाभ दायक होता है जिससे विद्यार्थी की प्रतिभा और उसके स्तर का निर्धारण किया जा सकता है विद्यार्थी को समझ निर्माण का आधार भी बनाया जा सकता है। विद्यार्थी अपने ज्ञान का

भिन्न–भिन्न भागों में बाँट कर समझ सकता है जो सरल माध्यम होता है। क्या, क्यूँ,कैसे, कब, कहाँ जैसे प्रश्न को महत्व मिलता है, यह एक प्रकार का प्रावधान है, जिससे एक समस्या का पता लगाया गया, उसके निदान के उपाय खोजने के लिए प्रविधि का निर्धारण किया गया जिससे उस समस्या का निराकरण हेतु उपाय किया जा सके।
उसके तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रविधि का प्रयोग करना जिससे उत्तम निष्कर्ष निकाला जा सके, इस शिक्षा नीति में विद्यार्थियों के लिए बनाए जाने वाले प्रश्न पत्र का महत्व समझते हुए उसके निर्माण का कम समझाया गया है, जिससे एक पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी की समझ को परिपक्वता प्रदान की जा सके।

पाठ्यक्रम के द्वारा जो लक्ष्य प्राप्त करने का उदेश्य रखा गया था उसको प्राप्त करने के लिए एक प्रश्न पत्र और विद्यार्थी की प्रतिभा का ज्ञान आवश्यक होता है। विद्यार्थियों के उत्तर से पता चलता है कि विद्यार्थी का स्तर कैसा है? जिससे उनके स्तर को बेहतर बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों को उनके विचार के आधार पर महत्व देने से उनके अंदर ऊर्जा का निर्माण होता है जिससे वह बेहतर बनने की ओर अग्रसित होते हैं। विद्यार्थियों के अंदर जिज्ञासा का निर्माण करना आवश्यक है। वर्तमान समय में जो जानकारी विद्यार्थियों के पास उपलब्ध हुए उससे आगे की जानकारी देने का कार्य करने से विद्यार्थी कक्षा में उपस्थित होगे। इसके लिए वक्ता ने ओपन बुक परीक्षा के बाद होने वाले बदलाव हो समझा जा सकता है जो विद्यार्थी के अंदर एक जिज्ञासा का भाव निर्मित करता है। विद्यार्थियों को जो परियोजना कार्य दिया जाए वह दैनिक जीवन से जोड़ते हुए पाठ्यक्रम को पूर्ण करने वाला होना चाहिए जिससे विद्यार्थी उसके प्रति अपनी रुचि दिखाएगा। विद्यार्थी को सामूहिक कार्य योजना देने का अधिक महत्व रहता है, प्रश्न उत्तर और उनकी सहभागिता को महत्व देना आवश्यक होता है। कार्य योजना में शोध आधार होना आवश्यक होता है। सामूहिक कार्य के मूल्यांकन का विवरण प्रस्तुत किया गया।

भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यक्ति के निर्माण का महत्व होता है, जिससे समाज और परिवार में व्यक्ति के जीवन को प्रभावी बनाया जा सकता

है। भारतीय मूल्यों और पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था के द्वारा जीवन को श्रेष्ठ चेतना का निर्माण किया जा सकता है।इस शिक्षा नीति 2020 से एक पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करने की वैज्ञानिक विधि का चित्रण किया गया जिससे बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। पाठ्यक्रम का संशोधन करने का तरीका बताया गया जिससे विद्यार्थी की संपूर्ण प्रतिभा का विकास किया जा सकता है। यह शिक्षा नीति प्राचीन भारत के मूल आधार को बढ़ावा देने का कार्य करती है जिससे एक राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।व्यक्ति के मूल्य निर्माण का कार्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था प्रारंभ से करती रही है। समकालीन परिदृश्य के जीवन को मार्ग दिखाने के लिए भारतीय परंपरा और मूल्यों की आवश्यकता है। जिससे समाज देश का विकास किया जा सके। मनुष्य को भारतीय ज्ञान परंपरा बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए प्रेरित करती है। जीवन के मूल्यों को आधार बनाकर मनुष्य का समाज एव राष्ट्र को उत्तम मार्ग पर ले जाना संभव है। व्यक्ति का जीवन व भविष्य बेहतर बनाने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा का सहारा लेने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ

- प्रो. के. एल. शर्मा, दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण, पृष्ठ संख्या, 2 24 अगस्त 2020
- सिंह दुर्गेश, क्रानिकल मासिक पत्रिका, मई 2020 पृष्ठ संख्या 80–81
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
- प्रकाश कुमार, 21वीं सदी की माँग पूरी करेगी शिक्षा नीति, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020
- [illegible] सुभाष, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुकाबला, दैनिक नवज्योति, पृष्ठ संख्या–4, 22 अगस्त 2020
- [illegible], भीम अपवाद (चर्चित मुद्दे) नई शिक्षा नीति, 2020